ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

यज्ञ संबन्धित जानकारी प्राप्त करने के लिए
7428894020 मिस कॉल करें
thearyasamaj

वर्ष 43, अंक 42 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 14 सितम्बर, 2020 से रविवार 20 सितम्बर, 2020
विक्रमी सम्वत् 2077 सृष्टि सम्वत् 1960853121
दयानन्दाब्द : 197 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह और महात्मा गांधी

- डॉ चन्द्रशेखर लोखण्डे

आर्यसमाज के गौरवशाली इतिहास में हैदराबाद सत्याग्रह की सफलता एक स्वर्णिम अध्याय के रूप में अंकित है। इस सत्याग्रह में अनेक आर्यसमाजी राष्ट्रभक्तों ने देश की एकता और अखण्डता के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर किया था। हमारे उन्हीं वीर बलिदानियों की शहादत के बल पर 17 सितम्बर 1948 को हैदराबाद के निजाम ने लौहपुरुष सरदार पटेल के समक्ष आत्म समर्पण किया था। हालांकि आर्यसमाज द्वारा हैदराबाद सत्याग्रह के आरम्भिक चरण में देश के नेताओं की सहमति नहीं थी, किन्तु जब आर्यों के तप-त्याग और बलिदान का प्रभाव सिद्ध होने लगा तो वे लोग भी इस आन्दोलन की प्रशंसा करने लगे।..... -सम्पादक

पं. जवाहरलाल नेहरू और महात्मा गांधी का कहना था कि आर्य समाज निजाम रूपी चट्टान से टक्कर ले रहा है और एक दिन यह इससे टकराकर चूर-चूर हो जायेगा। एक बात और यह भी थी कि, ब्रिटिश भारत के कांग्रेसी नेता जिसमें पं. जवाहरलाल नेहरू भी थे वे आर्य सत्याग्रह को बेवक्त की शहनाई कहकर असामायिक ठहरा रहे थे। उन्हें लग रहा था कि रियासत में कांग्रेस का अस्तित्व आर्य सत्याग्रह के कारण खतरे में आ गया है। इ.सन् 1927 से लेकर 1944 तक आर्य समाज निजाम मीर अस्मान अली खां बहादुर से टक्कर लेने वाला एकमेव संगठन था। गांधीजी आर्यसमाज के सत्याग्रह के साम्प्रदायिक करार दे चुके थे, अत: उनके समर्थन का सवाल ही नहीं था। उन्होंने इस बारे में चुप्पी साध रखी थी। हां, ना की स्थिति में वे डोलायमान हो रहे थे। 15 अप्रैल 1939 को मुंबई के चौपाटी के एक जलसे में कुंवर सुखलाल आर्य मुसाफिर ने गांधीजी को खुले रूप में चुनौती देकर चुप्पी तोडने की बात कही थी।

ये हैदराबाद में क्या हो रहा है,
कि महशर का आलम बर्पा हो रहा है।
हमारी हिमायत न कर प्यारे गांधी,
मगर ये तो कह दे बुरा हो रहा है।।

गांधी जी आर्य समाज और हिन्दू महासभा के सत्याग्रह से आशंकित थे कि कहीं हिन्दुस्तान के मुसलमान कांग्रेस से नाराज न हो जाएं। उनका हिन्दू-मुस्लिम एकता का प्रयोग इस सत्याग्रह से कहीं खटाई में न पड जाए। अत: उन्होंने प्रथमत: इस सत्याग्रह का विरोध किया और जैसे जैसे यह सत्याग्रह सफल होता दिखाई देने लगा तो मूक बनते चले गये। गांधीजी भले ही आर्यसत्याग्रह के समर्थन में मौन धारण कर चुके थे, लेकिन समय समय पर वे हैदराबाद में हो रहे अमानवीय कृत्यों पर निजाम सरकार को फटकारते भी थे।

सोलापुर की मिटिंग में तो उन्होंने विधान सभा स्पीकर और आर्य नेता घनश्याम सिंह गुप्त और लाला देशबन्धु गुप्त के द्वारा आर्य सत्याग्रह प्रारम्भ न करने का अग्रह किया था। उनका कहना था कि, ***आर्य समाज निजाम के खिलाफ सत्याग्रह करता है तो समूचे हिन्दुस्तान में हिन्दू मुसलमानों के दंगे भडक सकते हैं, जिसके कारण आर्यसमाज की छवि साम्प्रदायिक हो जायेगी। अत: उचित होगा कि स्टेट कांग्रेस के आधीन रहकर ही आर्यसमाज सत्याग्रह करे।***

आर्यसमाज का सत्याग्रह इतना सुनियोजित तरीके से चलाया जा रहा था कि निजाम सरकार को अन्त में इसके सामने घुटने टेक देने पडे। 9 मास तक चला यह सत्याग्रह इतना व्यापक हो गया था कि भारत के सभी सम्प्रदायों के लोगों ने इसमें भाग लिया, सिख, जैन बौद्ध यहां तक कि कुछ मुस्लिम कार्यकर्त्ताओं ने भी जेल जाकर इसकी असाम्प्रदायिकता को प्रकट किया। तब गांधी जी ने आर्य सत्याग्रह की सफलता पर खीज उतारते हुए हरिजन में कहा था-आर्यसमाज के नेताओं और हैदराबाद से सम्बन्ध रखने वाले मित्रों से मेरा बराबर विचार विमर्श चलता रहा था और इस सम्बन्ध में मैं मोलाना अब्दुल कलाम आजाद के सलाह मशवरे पर चल रहा था। सत्याग्रह की सफलता पर आज (8 अगस्त 1939) महात्मा गांधी यह कह रहे हैं कि वे मुसलमान मित्रों की सलाह पर निर्णय ले रहे थे। इन 9 मासों में गांधीजी की इस सत्याग्रह पर पैनी नजर थी। पर उन्हें पता नहीं था कि मौलाना सिराजुल हसन तिरमिजी कश्मीर के राष्ट्रीय नेता शेख अब्दुल्ला, सातारा के मौ. कमरुद्दीन, कराची के मियां मौसल अली, राजस्थान के फय्याज अली (जिन्होंने सत्याग्रह में स्वयं भाग लिया) मौ. अन्सारी जैसे

- शेष पृष्ठ 3 पर

स्वामी अग्निवेश जी का निधन

स्वामी अग्निवेश जी के आकस्मिक निधन पर आर्यसमाज गहरी शोक सम्वेदना प्रकट करता है। स्वामी जी पिछले कुछ समय से अस्वस्थ चल रहे थे। 11 सितम्बर, 2020 को आई. एल.बी.एस.अस्पताल दिल्ली में उनका निधन हो गया। आपका जन्म 21 सितम्बर, 1939 को जांजगीर चाम्पा (छत्तीसगढ़) राज्य में हुआ। आपने समाज सेवा के क्षेत्र में बंधवा मजदूरी एवं बाल मजदूरी जैसे मुद्दों पर आवाज उठाने का कार्य किया। स्वामी जी का अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। सार्वदेशिक सभा एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्यसन्देश परिवार एवं समस्त आर्यजगत् की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि।

महाशय धर्मपाल	सुरेशचन्द्र आर्य	प्रकाश आर्य	धर्मपाल आर्य	विनय आर्य
संरक्षक	प्रधान	मन्त्री	प्रधान	महामन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा			दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा	

अब 24 घंटे चल रहा है आपका अपना चैनल
आर्य संदेश टीवी
Arya Sandesh TV
www.AryaSandeshTV.com
आर्य समाज का 24 घण्टे चलने वाला टीवी चैनल
प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध
REAL 303 | Cruze tv 335 | VooDoo 2038 | eBaba | dailyhunt | TVZON | Shava tv | MXPLAYER | KaryTV
आर्यसमाज के समाचार एवं अपने सुझाव 7428894010 पर व्हाट्सएप्प करें। प्रतिदिन स्वयं जुड़ें और अन्यों को भी जुड़ने के लिए प्रेरित करें।
आर्यसन्देश टीवी पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों की समय सारणी पृष्ठ 8 पर दी गई है

वेद-स्वाध्याय

जीवन संग्राम

महि महे तवसे दीध्ये नृनिन्द्रायेत्था तवसे अतव्यान्।
यो अस्मै सुमतिं वाजसातौ स्तुतो जने समर्यश्चिकेत।।-ऋक्. 5/33/1
ऋषिः संवरणः प्राजापत्यः।। **देवता** - इन्द्रः।। **छन्दः** त्रिष्टुप्।।

शब्दार्थ - **महि** = महत्त्व के साथ **महे तवसे** = महान् बल के लिए मैं **नृन्** = अपनी नर-शक्तियों को, पौरुषों को **दीध्ये** = प्रदीप्त करता हूँ, ध्यान द्वारा प्रदीप्त करता हूँ, **इत्था** = इस प्रकार **तवसे इन्द्राय** = बलस्वरूप इन्द्र को [पाने के] के लिए **अतव्यान्** = मैं निर्बल [अपनी नृ-शक्तियों को प्रदीप्त करता हूँ] **यः** = जो इन्द्र **स्तुतः** = भक्ति से अभिमुख किया गया। **समर्यः** = संग्राम करानेवाला, संग्राम में हितकारक **अस्मै जने** = इस निर्बल जन के लिए **वाजसातौ** = जीवन-संग्राम में **सुमतिम्** = उत्तम मति को **चिकेत** = जगाता है।

विनय - जीवन का संग्राम बड़ा विकट है। मैं क्षुद्र हूँ, अत्यन्त निर्बल हूँ, परन्तु हे इन्द्र ! तुम तो महान् हो, बलवान् हो, सर्वशक्तिधाम हो और तुम्हारी शक्ति का आश्रय पाकर मैं निर्बल भी महाबली हो सकता हूँ। इसलिए मैं आज "अतव्यान्" होकर भी महान् बल पाने के लिए महत्त्वपूर्ण 'आरम्भ' करने लगा हूँ। तेरा ध्यान करके मैं आज अपनी सुप्त शक्तियों को जगाता हूँ, अपनी छिपी हुई 'नर' शक्तियों को, नेतृत्व की शक्तियों को उद्बुद्ध करता हूँ, ध्यान द्वारा अपने पौरुषों को प्रदीप्त करता हूँ, अपने-आपको प्रकाशित करता हूँ। इस प्रकार महान् बल को धारण करके मैं अपनी विजय-यात्रा पूरी करूँगा, परन्तु हे इन्द्र ! यह सब मैं तुम्हारा अवलम्बन पाकर ही कर सकूँगा। तुम 'समर्थ' हो, इस संसार-समर में विजय प्राप्त करानेवाले हो। उस श्रेष्ठ मति को तुम्हीं जानते हो और तुम्हीं दे सकते हो जिसके द्वारा इस घोर जीवन-संग्राम में विजय-प्राप्ति होती है। मैं जानता हूँ कि भक्ति से अभिमुख हुए तुम नित्य सुमति देनेवाले पथप्रदर्शक बन जाते हो। इसलिए इस दीन जन पर भी कृपा करो। तुम्हारा नाम लेकर, तुम्हारे लिए, मैं आज इस प्रकार महान् कार्य प्रारम्भ करने लगा हूँ, महान् बल पाने के लिए अपने पौरुषों को प्रदीप्त करने का महान् कार्य प्रारम्भ करने लगा हूँ।

-: साभार :-वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

यूरोप मे बढ़ते शरणार्थियों से बढ़ता सांस्कृतिक खतरा

विचारधारा की महामारी की चपेट में यूरोप

आज से कई वर्ष पूर्व हमने आर्य सन्देश में यूरोप के नये धार्मिक समीकरण पर प्रकाश डालते हुए लिखा था कि स्वदेशी यूरोपवासी नष्ट हो रहे हैं और विदेशी मुस्लिम समाज की संख्या वहां निरंतर बढ़ रही है। आगे चलकर यूरोप में हिंसा और दंगों की चपेट में दिखाई देगा। करीब पांच वर्ष पहले लगाया गया ये कयास अब सामने दिख रहा है मानव विकास सूचकांक में दुनिया के शीर्ष देशों में गिना जाने वाला स्वीडन 'अल्लाहो अकबर' के नारे लगाते दंगाइयों से आतंकित है। तथाकथित दंगाई स्वीडन के नीले झंडे को हरा करना चाहते हैं। स्वीडन सुलग रहा है। बार-बार कर्फ्यू लग रहा है।

स्वीडिश लोग अपने पड़ोस-सड़कों-बाजारों में आधुनिक हथियारों से लैस जिहादियों को देखकर हतप्रभ हैं। इसलिए प्रतिरोध के स्वर उठ रहे हैं। लोगों में आक्रोश है, और वे मांग कर रहे हैं कि स्वीडन को स्वीडिश लोगों के लिए ही रहना चाहिए। उनका नारा है कि जो लोग वहां शरण लेने पहुंचे हैं उन्हें स्वीडिश संस्कृति को अपनाना होगा। यहां के पहनावे, खानपान और लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं की इज्जत करनी होगी। इसलिए स्वाभाविक ही लोग इस्लामी विचार और कुरआन व हदीस पर सवाल उठा रहे हैं। वो कुरआन की 'काफिर' और 'जिहाद' की आयतों पर स्पष्टीकरण मांग रहे हैं। अब यूरोपीय समाज के विरोध करने के अपने तरीके हैं। इसी के चलते एक समूह ने प्रदर्शन करते हुए कुरआन की एक प्रति को आग के हवाले कर दिया। वे ईसाई तौर-तरीकों का भी इसी तरह विरोध करते आए हैं, लेकिन इस घटना को यहां के मुस्लिम शरणार्थियों ने आग के खेल का अवसर बना लिया और एक बार फिर सड़कों पर हिंसा का नंगा नाच शुरू हो गया।

केवल स्वीडन ही नहीं, फ्रांस, स्पेन, जर्मनी, ब्रिटेन, हॉलैंड, बेल्जियम सभी कमोबेश इन्ही हालातों से दो-चार हैं। अरब देशों से आ रहे मुस्लिम शरणार्थियों और कामगार प्रवासियों की बाढ़ के नीचे स्वीडन का सामाजिक कल्याण योजनाओं का ढांचा चरमरा रहा है। ये लोग स्वीडन की उन्नत जीवनशैली की सारी सुख-सुविधाओं का लाभ मुफ्त में उठा रहे हैं, लेकिन स्वीडन की सामाजिक-राजनीतिक-सांस्कृतिक परंपराओं को अपनाना नहीं चाहते, बल्कि दंगा-फसाद और दबाव बनाकर उन्हें अरबी-इस्लामी तौर-तरीकों में ढालना चाहते हैं। सिर्फ 5 साल में स्वीडन बलात्कार के मामलों में दुनिया में दूसरे क्रमांक पर पहुंच गया है।

थानों में शिकायतकर्ताओं में महिलाओं का प्रतिशत ज्यादा है। ज्यादातर उनके खिलाफ यौन अपराध अथवा बलात्कार की रपट लिखवाने आ रही हैं। ये बलात्कार दिन-दहाड़े हो रहे हैं। शिकार होने वालों में 12 साल की बच्चियां भी हैं। यूरोप की पहचान बन चुके म्यूजिक कंसर्ट्स में लड़कियां जाने से बचने लगी हैं। इन आयोजनों में ये लोग गिरोह बनाकर अपराध करते हैं। भीड़ में ये लोग किसी महिला या लड़की को चारों ओर से घेर लेते हैं। घेरे के अंदर के पुरुष बलात्कार करते हैं। इन घटनाओं के कारण यूरोप के कई मशहूर म्यूजिक बैंड स्वीडन में कार्यक्रम न करने की घोषणा कर चुके हैं।

पूरे स्वीडन में 100 के लगभग ऐसे संवेदनशील क्षेत्र बन गए हैं, जहां स्वीडिश लोग जाने से डरने लगे हैं। पुलिस भी स्वीडिश लोगों, विशेषकर महिलाओं को इन इलाकों से दूर रहने को कहने लगी है। हद तो यह है कि पुलिस की जान को खतरे के चलते इन इलाकों से कुछ छोटी पुलिस चौकियों को ही स्थानांतरित कर दिया गया है। यदि कोई शरणार्थी किसी का पर्स या चेन छीनकर भाग रहा है, और वह भागता हुआ ऐसे संवेदनशील क्षेत्र में घुस जाता है तो पुलिस भी उसका पीछा छोड़कर लौट आती है। इसके पीछे दो कारण होते हैं। एक, वहां कई गुना ज्यादा हथियारबंद गुर्गे मौजूद होते हैं। दूसरा, यदि कोई पुलिस वाला या प्रशासन का व्यक्ति सख्ती दिखाता है तो उसे नफरत फैलाने वाला नस्लवादी ठहराने के लिए लोग तैयार बैठे हैं। इनमें यहां के वामपंथी-

....स्वीडिश लोग अपने पड़ोस-सड़कों-बाजारों में आधुनिक हथियारों से लैस जिहादियों को देखकर हतप्रभ हैं। इसलिए प्रतिरोध के स्वर उठ रहे हैं। लोगों में आक्रोश है, और वे मांग कर रहे हैं कि स्वीडन को स्वीडिश लोगों के लिए ही रहना चाहिए। उनका नारा है कि जो लोग वहां शरण लेने पहुंचे हैं उन्हें स्वीडिश संस्कृति को अपनाना होगा। यहां के पहनावे, खानपान और लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं की इज्जत करनी होगी। इसलिए स्वाभाविक ही लोग इस्लामी विचार और कुरआन व हदीस पर सवाल उठा रहे हैं। वो कुरआन की 'काफिर' और 'जिहाद' की आयतों पर स्पष्टीकरण मांग रहे हैं। अब यूरोपीय समाज के विरोध करने के अपने तरीके हैं। इसी के चलते एक समूह ने प्रदर्शन करते हुए कुरआन की एक प्रति को आग के हवाले कर दिया। वे ईसाई तौर-तरीकों का भी इसी तरह विरोध करते आए हैं, लेकिन इस घटना को यहां के मुस्लिम शरणार्थियों ने आग के खेल का अवसर बना लिया और एक बार फिर सड़कों पर हिंसा का नंगा नाच शुरू हो गया।.....

समाजवादी-उदारवादी-प्रगतिशील नेता, बुद्धिजीवी और पत्रकार शामिल हैं।

स्वीडन के संवेदनशील इलाकों में मीडिया के लोगों पर भी हमले होते हैं। कभी अचानक सड़कों पर खड़ी कारें जलने लगती हैं। चाहे जब 50-60 या 100 कारें फूंक दी जाती हैं। मीडिया की रपट में आगजनी करने वालों के लिए यूथ गैंग शब्द का उपयोग किया जाता है, जबकि सभी जानते हैं कि इस यूथ गैंग में सिर्फ और सिर्फ शरणार्थी मुस्लिम युवा होते हैं। स्वास्थ्य सेवाएं देने वाले एम्बुलेंस चालक इन इलाकों में जाने के लिए विशेष सुरक्षा और हथियारों के लाइसेंस की मांग कर रहे हैं। इन इलाकों में काम करने वाली स्वीडिश महिलाओं ने अपनी नौकरियां छोड़ दी हैं। वायलिन या बांसुरी बजाते ये कलाकार अचानक पीठ या पेट अथवा सर पर पड़ने वाले घूंसों से भयभीत हैं, क्योंकि 'संगीत' इस्लाम के खिलाफ है।

इस सबसे गुजरने वाला स्वीडन अकेला नहीं है। फ्रांस, स्पेन, जर्मनी, ब्रिटेन, हॉलैंड, बेल्जियम सभी कमोबेश इन्ही हालातों से दो-चार हैं। सस्ते श्रमिकों के लालच में यहां की सरकारों ने अरब, अफगानी, पाकिस्तानी, अफ्रीकी कामगारों को बेहिसाब वीजा और नागरिकता बांटी। नतीजा विनाशकारी साबित हो रहा है। पिछले 30 साल से यूरोपीय शहरों में जनसंख्या असंतुलन तेजी से बढ़ रहा है। यूरोपीय देशों के मूल नागरिकों से इन अरब प्रवासियों की जन्मदर 4 से 5 गुना ज्यादा है। इसलिए फ्रेंच, ब्रिटिश, जर्मन, डच, स्वीडिश लोग अपने ही शहरों में अल्पसंख्यक होते जा रहे हैं। तेजी से बढ़ती हुई मुस्लिम जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा कट्टरता की खुराक पर पला है। वह 2030-40 तक एक नए इस्लामी यूरोप का सपना देख रहा है।

- सम्पादक

आत्मा और मोक्ष

.....अथक प्रयासरत रहने के कारण मधुमक्खी शहद इकट्ठा कर लेती है, पक्षी प्रयासों से स्वादिष्ट फलों का आनंद लेते हैं, सूरज लगातार चमकने के कारण पूजनीय है। इसलिए पुरुषार्थी बनने के लिए अथक प्रयास करें। पुरुषार्थी को कर्मों द्वारा अपने भाग्य का बोध होता है। ऐसा व्यक्ति संदिग्ध भाग्य-भविष्यवाणी करने वाले पंडितों पर और अस्पष्ट पूर्वानुमान आदि पर निर्भर नहीं करता है। मानव जीवन का लक्ष्य क्या है?.... कर्मों के आधार पर आत्मा का जन्म-मरण अनन्त काल तक चलता रहेगा और इसीलिए वैदिक वांगमय आत्मा की मुक्ति के लिए ध्यान, भक्ति और उपासना के मार्ग को दर्शाता है ताकि जन्म-मरण के कुचक्र से छुट्टी प्राप्त हो! परन्तु अनन्त तो ये भी नहीं है। सृष्टि-सृजन, सृष्टि-पालन और सृष्टि- प्रलय के परमात्मा द्वारा संचालन के चक्रव्यूह को तो वही सर्वान्तर्यामी ही जानता है और इस व्यूह में पुनर्जन्म के वशीभूत आत्मा मोक्ष प्राप्ति को अनन्त काल तक संजोये नहीं रख सकता। तीसरे पायदान प्रलय-पश्चात सृष्टि पुनः क्रम साधेगी और जीवात्मा त्रैतवाद सिद्धान्तानुसार किसी देह को छोड़कर नये कवच में प्रविष्ट करेगी अपने कर्मानुसार, यही अटल सत्य है।.....

गतांक से आगे -

पुनर्जन्म - व्यक्ति पूर्ण मुक्ति, निर्वाण या मोक्ष प्राप्त कर सकता है और पुनर्जन्म या आत्माओं के संचरण को इस विधि से समाप्त किया जा सकता है। इस जीवन में आत्मा की मुक्ति या निर्वाण भौतिकवाद और आध्यात्मिकता के अद्वितीय संश्लेषण के माध्यम से संभव है। वे ही लोग मुक्त हैं जिन्होंने अपनी इच्छाओं को जीत लिया है। बाकी सब देखने में स्वतन्त्र मालूम पड़ते हैं, मगर वास्तव में बंधन से जकड़े हुए हैं।

प्रबुद्धता की ऊंचाइयां प्राप्त करने के पश्चात्, एक व्यक्ति नि:स्वार्थ सेवाओं की अंतिम सामाजिक जिम्मेदारी को पूरा करने के लिए आत्मा की क्षमता का उपयोग करता है। व्यक्ति विशेष परम मोक्ष को प्राप्त करता है। इस प्रकार निरंतर और गहन तपस्या से आत्मा के पुनर्जन्म को रोकना निश्चित रूप से संभव है। इसे प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को परिश्रमी होना चाहिए।

आत्मा एवं परमात्मा में आधारभूत अंतर - भगवान/परमात्मा का कोई लिंग नहीं होता। इसलिए यह सवाल कि ईश्वर पुरुष है या स्त्री या तटस्थ, ये प्रश्न ही निरर्थक है। परमात्मा के मूल रूप से तीन प्रमुख गुण हैं- 1. अस्तित्व-सत, 2. चेतना-चित्त और 3. आनंद-परमानन्द । इस कारण से भगवान को सच्चिदानंद कहा जाता है। परमात्मा की उपस्थिति को कोई महसूस कर सकता है, शुद्ध योगियों ने ध्यान की गहरी अवस्था में ईश्वर की मौजूदगी का अनुभव किया है।

इस क्रम में, आत्मा वास्तव में ऊर्जा है। इस गुण के द्वारा, शरीर सभी जीवित क्रियाएं करता है। ऊपर बताये तीन गुणों की वनिस्पत आत्मा में दो ही गुणों की मौजूदगी बताई गई है। वे हैं 1. चेतना-चित्त और 2. अस्तित्व-सत। लेकिन आत्मा में तीसरा गुण- आनन्द का अभाव दर्शाया गया है, आत्मा स्वयं इस गुण की प्राप्ति में सक्षम नहीं - वह परमानन्द है। यह आत्मा और परमात्मा में मूल अंतर है। यद्यपि आत्मा इस जड़ शरीर को ऑपरेटिव और ऊर्जावान बनाता है, फिर भी इसका ग्रेड सर्वज्ञ नामक परमात्मा से कम है। आनन्द को प्राप्त करवाना परमात्मा की दया और कृपा पर निर्भर करता है, इसीलिए परमात्मा की आराधना की महत्ता बताई गई है।

पुरुषार्थ - कर्म वह प्राकृतिक सिद्धान्त है जो नि:स्वार्थ कर्म, कार्य या गतिविधियों से संबंधित है। हर कोई अपने कर्मों का फल प्राप्त करता है। जैसा तुम बोओगे वैसी ही फसल काटोगे, ये अटल सिद्धांत है। हर कोई अपने कर्म या कार्यों के लिए जिम्मेदार है। कोई भी मध्यस्थ पैगंबर, पुजारी या गुरु किसी के अपने कार्यों के परिणामों को नहीं बदल सकता है। जब कोई किसी तरह की नि:स्वार्थ गतिविधि करता है, उसे निष्काम कर्म कहा जाता है। ईशोपनिषद इसका सुंदर वर्णन करता है। योगीराज श्री कृष्ण गीता में निष्काम कर्म का वर्णन करते हैं, २/४७, जो भक्तिपूर्वक कर्म करते हैं और अपने आपको कारण के लिए समर्पित करते हैं। नि:स्वार्थ परिणीत धर्म-कर्म को निष्काम कर्म कहा जाता है। भाग्य की निष्काम कर्म के साथ या पुरुषार्थ के साथ कोई भूमिका नहीं है। भाग्य किसी भी चीज के परिणाम को बदल भी नहीं सकता है। ऐसा सोचना, भाग्य के सहयोग से वांछित फल प्राप्त करने का उपक्रम मात्र भ्रम होगा, क्योंकि न्याय का विस्तार सर्वोच्च ईश्वर के हाथों में है। उसकी न्याय-व्यवस्था का कोई आर-पार नहीं।

पुरुषार्थ क्या है? - जब कोई व्यक्ति स्वयं और दूसरों के लिए विकास को बढ़ावा देने के लिए मेहनती, ठोस और लाभकारी कार्य करता है या प्रयास करता है, तो उसे पुरुषार्थ कहा जाता है और उसका कर्ता पुरुषार्थी होता है। इसके अलावा, किसी के जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए निरंतर, सकारात्मक प्रयास सार्थक पुरुषार्थ है। पुरुषार्थ को हिंदू-धर्म के अनुसार चार तत्वों में वर्गीकृत किया जा सकता है, यथा धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष।

अथक प्रयासरत रहने के कारण मधुमक्खी शहद इकट्ठा कर लेती है, पक्षी प्रयासों से स्वादिष्ट फलों का आनंद लेते हैं, सूरज लगातार चमकने के कारण पूजनीय है। इसलिए पुरुषार्थी बनने के लिए अथक प्रयास करें। पुरुषार्थी को कर्मों द्वारा अपने भाग्य का बोध होता है। ऐसा व्यक्ति संदिग्ध भाग्य-भविष्यवाणी करने वाले पंडितों पर और अस्पष्ट पूर्वानुमान आदि पर निर्भर नहीं करता है। मानव जीवन का लक्ष्य क्या है?

वैदिक शास्त्रों ने एक कथन में जीवन के लक्ष्य को संक्षेप में प्रस्तुत किया है। **धर्मार्थ काममोक्षाणां सद्य: सिद्धिर्भवेन्न:।** इसका अर्थ है- एक पुण्य जीवन का नेतृत्व करके, कोई व्यक्ति धन का अधिकार प्राप्त कर सकता है, और कोई व्यक्ति सभी इच्छाओं का सही ढंग से आनंद ले सकता है और पूरी भी कर सकता है। अंतत: एक व्यक्ति इन सभी इच्छाओं को पूरी करता है और अपने आप को सभी इच्छाओं के चंगुल से मुक्त करता है और व्यक्ति स्वयं का स्वामी बन जाता है। इसे ही मोक्ष की संज्ञा दी गई है, यह मानव शरीर के साथ जन्म लेने के एक व्यक्ति के जीवन का संपूर्ण उद्देश्य है।

जब आत्मा आध्यात्मिक विकास, या विकास के उच्चतम स्तर पर पहुँचता है, तो व्यक्ति को परम शांति प्राप्त हो सकती है। यह आत्मा की अंतिम स्थिति है जहां कोई अधिक इच्छा या पीड़ा नहीं है, इस स्तर को आत्मा की मुक्त अवस्था कहा जाता है। इस अस्तित्व की स्थिति को आमतौर पर मुक्ति, निर्वाण या मोक्ष के रूप में जाना जाता है।

उपसंहार - कर्म करना ही आत्मा का स्वभाव है और कर्म करके वह उसके फल से बंध जाती है। फल को भोगने का और भविष्य के लिए कर्म करने का एकमात्र साधन (जीव या प्राणी का) शरीर ही है। इसके अलावा कर्म करने और उसके फल को भोगने का कोई अन्य साधन नहीं है। हां, यदि मुक्ति (मोक्ष प्राप्ति) हो जाए तो फिर उसका फल बिना शरीर धारण किए ही आत्मा भोगता है। परन्तु वह भी अनन्तकाल तक नहीं। अत: शरीरों को धारण करना आत्मा का प्राकृतिक स्वभाव है। इसके बिना सांसारिक सुखों व दु:खों को आत्मा द्वारा भोगना असंभव है, सम्पूर्ण मुक्ति होने तक।

जीवात्मा एक सूक्ष्म सत्ता है जो एकादशी, अल्प-परिमाण, अल्पज्ञ, रंग, रूप व भार से रहित, अनादि, नित्य, अमर, अविनाशी, जन्म व मृत्यु को प्राप्त होने वाली, जन्म व मृत्यु में फंसी हुई एक सत्ता है। इस आत्मा को परमात्मा द्वारा मनुष्य योनि प्राप्त होने पर उद्देश्य पूर्ण वेद-ज्ञान प्राप्त कर श्रेष्ठ कर्म करके मुक्ति का लक्ष्य प्राप्त करना होता है। यह सृष्टि मनुष्य को मोक्ष प्राप्ति के लक्ष्य को प्राप्त करने में साधन के रूप में कार्य करती है। जो सृष्टि में सुख व लोभों आदि में फंस जाता है, वह मोक्ष प्राप्ति के लक्ष्य से भटक कर दूर हो जाता है। और परिणामत: वह कर्मानुसार बन्धनों में बंध कर भिन्न-भिन्न रोशनियों-योनियों आदि में जन्म लेकर सुख और दु:ख भोगता रहता है। मनुष्य का आत्मा अनादि होने से अविनाशी है। यह सदा ब्रम्हाण्ड में अस्तित्व में बना रहेगा। इसी कारण परमात्मा द्वारा इसके कर्मों के आधार पर आत्मा का जन्म-मरण अनन्त काल तक चलता रहेगा और इसीलिए वैदिक वांगमय आत्मा की मुक्ति के लिए ध्यान, भक्ति और उपासना के मार्ग को दर्शाता है ताकि जन्म-मरण के कुचक्र से छुट्टी प्राप्त हो! परन्तु अनन्त तो ये भी नहीं है। सृष्टि-सृजन, सृष्टि-पालन और सृष्टि-प्रलय के परमात्मा द्वारा संचालन के चक्रव्यूह को तो वही सर्वान्तर्यामी ही जानता है और इस व्यूह में पुनर्जन्म के वशीभूत आत्मा मोक्ष प्राप्ति को अनन्त काल तक संजोये नहीं रख सकता। तीसरे पायदान प्रलय-पश्चात सृष्टि पुन: क्रम साधेगी और जीवात्मा त्रैतवाद सिद्धान्तानुसार किसी देह को छोड़कर नये कवच में प्रविष्ट करेगी अपने कर्मानुसार, यही अटल सत्य है। प्राणी द्वारा किए कर्म ही आत्मा को भी चैतन्य बनाए रखने के लिए अलग-अलग शरीरों को निर्धारित करते हैं। यह जटिल-चक्र उस चराचर के पास ही गोपनीय है!

- सुधीर कुमार बंसल
सहमन्त्री, आर्य समाज (सैन्ट्रल),
सेक्टर 15, फरीदाबाद (हरि.)

प्रथम पृष्ठ का शेष

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह और ....

मुस्लिम नेता निजाम के इस रवैये की निन्दा कर रहे थे और आर्यसमाज के आन्दोलन को सही ठहरा रहे थे। अन्त में महात्मा गांधी ने यह सार्वजनिक रूप से हरिजन में स्वीकार किया कि आर्यसमाज का अन्त मीठा हुआ। (निजाम ने मिष्ठान्न खिलाकर आर्यों की मांगे स्वीकार की) इस युद्ध के सम्बन्ध में मैंने एक अक्षर भी नहीं लिखा। मुझे यह प्रश्न ऐसा प्रतीत हुआ था कि मैंने उसकी चर्चा करना ठीक नहीं समझा, परन्तु इसका अर्थ यह नहीं था कि इस सत्याग्रह के सम्बन्ध में मेरी कोई ममता नहीं थी।

...आर्यसमाज की मांगों के लिए मुझे सहानुभूति थी। वे मांगें साधारण और जन्मसिद्ध अधिकारों से सम्बन्ध रखती थी। मैं अपने दृष्टिकोण से आर्यसत्याग्रह के पक्ष में नहीं था। अपने दृष्टिकोण के हेतु मैंने उन्हें बता दिया था परन्तु उनका सत्याग्रह मेरे सत्याग्रह की अपेक्षा यदि अधिक अच्छा नहीं तो अधिक बुरा भी नहीं था। इस प्रकार मैं निरुत्तर हो गया। आर्य सत्याग्रह स्नेहभाव से स्थगित किया गया इसके लिए मुझे व्यक्तिगत रूप से बड़ा सन्तोष है। इस युद्ध (यहां गांधी जी सत्याग्रह शब्द को टालना चाहते हैं) में दोनों तरफ से काफल तनातनी पैदा हुई।

...स्नेहभाव से इस समस्या का हल हो जाने पर मैं निजाम सरकार और आर्यसमाज दोनों का अभिनन्दन करता हूं। वे सत्याग्रह की सफलता के बाद आर्य समाज के इस कार्य से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने हर्जाने के रूप में निजाम सरकार से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को 15 लाख रुपये दिलवाने के लिए अपनी प्रतिष्ठाण दांव पर लगा दी और 15 लाख रुपये सार्वदेशिक सभा को प्राप्त करवा दिए। इस सत्याग्रह में उन 9 मासों में 12 हजार सत्याग्रही जेल में बन्द किए जा चुके थे और 45 के करीब जेलों में और बाहर आर्यों की हत्याएं हुई थी। हैदराबाद रियासत का यह संघर्ष भी आर्यसमाज के युवा कार्यकर्ता हुतात्मा वेदप्रकाश आर्य, गुंजोटी के बलिदान से प्रारम्भ हुआ था। यह इतिहास स्वर्णाक्षरों में लिखा जाना चाहिए।

क्या आज आर्यसमाज देश की सामायिक समस्याओं को सामने रखकर इस तरह का आन्दोलन कर इतिहास दोहराएगा? क्या कार्यकर्ता इस पर विचार करेंगे? समय ही बतलाएगा।

- सीताराम नगर, लातूर (महा.)

हिन्दी दिवस (14 सितम्बर) पर विशेष

हिन्दी को भी चाहिए संक्रमण से मुक्ति

...क्या हम अखबार को समाचार पत्र, आजादी को स्वतंत्रता, आबादी को जन-संख्या, आम को सामान्य, आराम को विश्राम, आवाज को ध्वनि, इंतजाम को प्रबंध, इंतजार को प्रतीक्षा, इंसान को मनुष्य, इजाजत को आज्ञा, इबादत को प्रार्थना, इज्जत को मान या प्रतिष्ठा, इलाके को क्षेत्र, इलाज को उपचार, इश्तिहार को विज्ञापन, इस्तीफे को त्यागपत्र, ईमानदार को निष्ठावान, उम्र को आयु, एतराज को आपत्ति, एहसान को उपकार, कत्ल को हत्या, अक्ल को बुद्धि, कर्ज को ऋण, कमी को अभाव, करीब को समीप, कसूर को दोष, कातिल को हत्यारा, काबिल को सक्षम, कामयाब को सफल, किताब को पुस्तक, किस्मत को भाग्य, कीमत को मूल्य, कुदरत को प्रकृति, कोशिश को प्रयास, खतरनाक को भयानक, खराब को बुरा, खराबी को बुराई, खारिज को रद्द, खूबसूरत को सुन्दर, गिरफ्तार को बंदी, गुनाह को अपराध, गुलाम को दास, जबरदस्ती को दबाव पूर्वक, जरूर को अवश्य, जल्दी को शीघ्र, जानवर को पशु, जिंदगी को जीवन, ज्यादा को अधिक, झूठ को मिथ्या, तरीका को ढंग, तस्वीर को चित्र, तारीख को दिनांक, तेज को तीव्र, दुश्मन को शत्रु, धोखा को छल, नतीजे को परिणाम, परेशान को दुखी, फीसदी को प्रतिशत, फैसले को निर्णय, वजह को कारण नहीं बोल सकते।...

राजभाषा का स्थान14 सितंबर 1949 को मिला था। यदि इसकी पृष्ठ भूमि में जाएँ तो पता चलता है कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने हिंदी को जनमानस की भाषा बताते हुए 1918 के हिंदी साहित्य सम्मेलन में इसे राष्ट्रभाषा बनाने की बात कही थी। जवाहर लाल नेहरू जी ने भी हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने की वकालत तो की थी किन्तु उनके शासनकाल में ही हिंदी को एक 'खिचड़ी भाषा' के रूप में विकसित करने का अतार्किक और अवैज्ञानिक प्रयास किया गया। उनका मानना था कि हिंदी में देश की सभी भाषाओं के शब्दों को सम्मिलित कर एक ऐसी 'खिचड़ी भाषा' बना ली जाए जिस पर किसी को आपत्ति ना हो। उन्होंने हिंदी को 'हिंदुस्तानी' (हिंदी और ऊर्दू का मिश्रण) भाषा बनाने का समर्थन किया था। यह प्रयास देखने में तो उस समय अच्छा लगा, परंतु, वास्तव में यही विचार हिंदी का सर्वनाश करने वाला सिद्ध हुआ।

संयोगवश, गत कुछ माह से मुझे लगातार हिन्दी के साथ-साथ रेडियो से उर्दू भाषा में भी समाचार सुनने का सौभाग्य मिला। मैंने पाया कि एक ओर जहां उर्दू के समाचारों में हिन्दी का एक शब्द ढूँढे भी सुनाई नहीं देता तो वहीं हिन्दी का कोई भी समाचार ऐसा नहीं था जिसमें उर्दू या अंग्रेजी भाषा की घुसपैठ ना हो। तभी मेरे मन में प्रेरणा जागी कि क्या हम अपनी राजभाषा के संक्रमण की मुक्ति हेतु कुछ नहीं कर सकते!

प्रतिवर्ष 14 सितम्बर आते ही हम हिन्दी बोलने, लिखने, कहने, सुनने, सुनाने इत्यादि के लिए बड़े बड़े प्रचार माध्यमों का प्रयोग तो करते हैं किन्तु दशकों से अपनी स्व-भाषा में हुए व्यापक संक्रमण की मुक्ति हेतु कोई विचार व्यवहार में नहीं ला पाते। ये संक्रमण हिन्दी भाषा में इतना गहराई से पैठ बिठाए हुए है कि हमें कभी पता ही नहीं चलता कि ये शब्द वास्तव में हिन्दी के नहीं हैं। महत्वपूर्ण बात यह भी है कि शब्दों के इस संक्रमणकारी जंजाल से हमारे भाषाई साहित्यकार भी अछूते नहीं रहे और उन शब्दों को निकलकर आपको यह कहा जाए कि इनका हिन्दी समानार्थी बताओ तो आपको लगेगा कि ये तो हिन्दी के ही हैं। इन घुसपैठिए शब्दों के प्रचार प्रसार में हिंदी समाचार पत्र-पत्रिकाओं, चलचित्रों, इत्यादि साधनों का विशेष स्थान है। हिन्दी के संक्रमण मुक्ति हेतु सबसे पहले उन्हें पहचानना होगा। औरउसके बाद उन्हें भगाना होगा। आज मैंने बड़े ध्यान लगा कर 227 शब्दों की एक प्रारम्भिक सूची उन उर्दू के शब्दों की बनाई जो हिन्दी की आत्मा पर सीधा प्रहार कर रहे थे। आओ! उनमें से कतिपय शब्दों पर विचार करते हैं।

विचार आया कि क्या हम अखबार को समाचार पत्र, आजादी को स्वतंत्रता, आबादी को जन-संख्या, आम को सामान्य, आराम को विश्राम, आवाज को ध्वनि, इंतजाम को प्रबंध, इंतजार को प्रतीक्षा, इंसान को मनुष्य, इजाजत को आज्ञा, इबादत को प्रार्थना, इज्जत को मान या प्रतिष्ठा, इलाके को क्षेत्र, इलाज को उपचार, इश्तिहार को विज्ञापन, इस्तीफे को त्यागपत्र, ईमानदार को निष्ठावान, उम्र को आयु, एतराज को आपत्ति, एहसान को उपकार, कत्ल को हत्या, अक्ल को बुद्धि, कर्ज को ऋण, कमी को अभाव, करीब को समीप, कसूर को दोष, कातिल को हत्यारा, काबिल को सक्षम, कामयाब को सफल, किताब को पुस्तक, किस्मत को भाग्य, कीमत को मूल्य, कुदरत को प्रकृति, कोशिश को प्रयास, खतरनाक को भयानक, खराब को बुरा, खराबी को बुराई, खारिज को रद्द, खूबसूरत को सुन्दर, गिरफ्तार को बंदी, गुनाह को अपराध, गुलाम को दास, जबरदस्ती को दबाव पूर्वक, जरूर को अवश्य, जल्दी को शीघ्र, जानवर को पशु, जिंदगी को जीवन, ज्यादा को अधिक, झूठ को मिथ्या, तरीका को ढंग, तस्वीर को चित्र, तारीख को दिनांक, तेज को तीव्र, दुश्मन को शत्रु, धोखा को छल, नतीजे को परिणाम, परेशान को दुखी, फीसदी को प्रतिशत, फैसले को निर्णय, वजह को कारण नहीं बोल सकते - इन सभी 227 शब्दों को मेरे ट्विटर @vinod_bansal पर या फेसबुक पर जाकर देख सकते हैं।

अब कुछ उदाहरण अंग्रेजी की घुसपैठ के। एक व्यक्ति अपनी पत्नी से- 'आज तो कोई ऐसा डेलिशियस फूड बनाओ कि 'मूड फ्रेश हो जाए'। महोदय आफिस पहुंचे तो बॉस का 'स्टुपिड' टाइप सम्बोधन। हमारी सुबह की चाय 'बेड-टी' तो शौचादिनिवृति 'फ्रेश हो लो' का सम्बोधन बन चुकी। कलेवा (नाश्ता) 'ब्रेकफास्ट' बन गया तो दही 'कर्ड'। अंकुरित 'स्पराउड्स' तो पौष्टिक दलिया 'ओट्स', सुबह की राम राम/नमस्ते 'गुड मॉर्निंग' तो शुभरात्रि 'गुड नाईट' में बदल गई। नमस्ते 'हेलो हाय' में तो 'अच्छा चलते हैं' 'बाय' में रूपांतरित हो चुका। माता 'मॉम' तो पिता 'पॉप' होलिए। चचेरे, ममेरे व फुफेरे सम्बंध सब 'कजन' बन चुके तो, गुरुजी 'सर' में बदल गए तथा गुरुमाता 'मैडम'। भाई 'ब्रदर', बहन 'सिस्टर' तो दोस्त आज 'फ्रेंड' हैं। लेख 'आर्टिकल' तो कविता 'पोएम' निबन्ध 'ऐस्से', पत्र 'लेटर', चालक 'ड्राइवर' परिचालक 'कंडक्टर', वैद्य 'डॉक्टर' हंसी 'लाफ्टर', कलम 'पेन' पत्रिका 'मैग्जीन', उधार 'क्रेडिट' तथा भुगतान 'पेमेंट' बन गया। कुल मिलाकर बात यह है कि हम चाहे हिन्दू हैं, हिंदी हैं, हिंदुस्थानी हैं किन्तु हिन्दी को नहीं बचा पाए!

आओ इस बार के हिन्दी दिवस को हम एक प्रेरणा दिवस के रूप में मनाएं। आज से ही प्रारम्भ करें कि जब भी हम हिन्दी में बोलेंगे, लिखेंगे, कहेंगे, सुनेंगे, गाएंगे, गवाएंगे तो सिर्फ हिन्दी के ही शब्दों का प्रयोग करेंगे और भाषा में हुई घुसपैठ के विरुद्ध एक अभियान छेड़कर पहले घुसपैठियों को ठीक से पहचानेंगे, विकल्प देखेंगे और उसे पूरी तरह से संक्रमण मुक्तकर स्वभाषा के गौरव को जन-जन तक पहुंचाएंगे।

हिन्दी है माथे की बिंदी,
इसका मान बढ़ाएंगे।
हम सब भारतवासी मिलकर
इसे समृद्ध बनाएंगे।।

- विनोद बंसल
राष्ट्रीय प्रवक्ता, विश्व हिन्दू परिषद्

स्वास्थ्य रक्षा

जल चिकित्सा के वैदिक प्रमाण

इस संसार में कोई भी मनुष्य अस्वस्थ एवं दुःखी नहीं रहना चाहता। प्रत्येक मनुष्य उत्तम स्वास्थ्य की कामना करते हैं। किंतु अनुचित आहार गलत जीवनशैली और पर्यावरण प्रदूषण आदि के कारण आज उत्तम स्वास्थ्य प्राप्त करना एक कठिन चुनौति है। ऐसे में वेदज्ञान के माध्यम से प्रचलित जल चिकित्सा एक विशिष्टि पद्धति के विषय में यहां प्रस्तुत है - स्वास्थ्य रक्षा के कुछ उपयोगी अनुभवी सूत्र संदेश।- सम्पादक

जल चिकित्सा पद्धति का वेदों में वर्णन आता है। जिनकी निरन्तर खोज का परिणाम ही आधुनिक युग की प्राकृतिक चिकित्सा है। वेद में जल के प्रयोग, स्नान इत्यादि का विस्तृत उल्लेख मिलता है।

शन्नोदेवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयो रभिश्रवन्तुनः।।

(अथर्व. 1 सू. 6 मं. 1)

अर्थात् कल्याण कारक जल, दिव्य गुणों से युक्त हमारी अभीष्ट सिद्धि के लिए, पान एवं रक्षा के लिए सुखदायक होवे और हमारे रोग की शान्ति के लिए और भय दूर करने के लिए, हमारे लिए सब ओर से सुख की वर्षा करें।

आपो हिष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन, महे रणाय चक्षसे।।

(अथर्व. 1, सूं. 5, मं. 1)

अर्थात् जल निश्चय करके हम सबके लिए सुख कारक होता है, उससे बड़े पराक्रम और दर्शन की शक्ति उत्पन्न हो सकती है।

वेद का निम्नलिखित मंत्र तो प्रत्येक रोग में जल प्रयोग का मूलभूत प्रमाण है।

अपस्तवन्तरमृतमरसु भेषजम्।
अपामुत प्रशस्तिभिरश्वाभवथ वाजिनी गावो भवथ वाजिनीः।

(अथर्व. 1 सू. 4 मं. 4)

अर्थात् जल एक सर्वोत्तम औषधि है, जल में रोगनिवारक अमृतरस है यह भय जीतने वाला है।

इन सब प्रमाणों से हमें यह जान लेना चाहिए कि जल चिकित्सा वेदकाल से ही चल रही है। आज प्राकृतिक चिकित्सा में जितने स्नान बताए गए हैं वे सब स्नान वेद में वर्णित हैं। इसलिए सभी पाठकों को इनसे लाभ उठाना चाहिए।

जर्मनी के लिपजिंग नगर के "मिस्टर लूईकूने" ने जलचिकित्सा से प्रभावित होकर एक ग्रन्थ की रचना ही कर डाली। जो कि भारतवर्ष में जल चिकित्सा के नाम से प्रसिद्ध है। वे आयु पर्यन्त इसके भक्त बने रहे। उनकी कहानी इस प्रकार है-'मिस्टर लूईकूने' के माता-पिता की मृत्यु ऐलोपैथिक डॉक्टरों की चिकित्सा दौरान हुई थी। वे स्वयं भी 20 वर्ष की छोटी-सी आयु में सिर और फेफड़ों के भयानक रोगों से पीड़ित रहने लगे थे, पेट में फोड़ा हो गया। अवस्था इतनी खराब हो गई थी कि उन्हें जीवन की आशा नहीं रही। डॉक्टरों ने रोग को असाध्य कहकर चिकित्सा से इनकार कर दिया। उसी स्थिति में मौत की प्रतीक्षा करने लगे।

मेलजर (Meltzer) थियोडन हैन (Theodon Honni) से आदि प्रसिद्धि पा रहे थे। लूईक्ने उनके आश्रम में चले गए और अपनी चिकित्सा आरम्भ कर दी। इस प्रकार अपनी बुद्धि के तेज प्रभाव के कारण चिकित्सकों के बताए हुए साधनों से रोग मुक्त होकर 1833 ई. में उन्होंने अपना प्राकृतिक चिकित्सालय खोल दिया। कूने का सिद्धान्त है कि सब रोगों की जड़ शरीर में विकार है। जो कि आन्तरिक सफाई से ठीक हो सकता है।

- शेष अगले अंक में

इस्लामिक कानूनों से आजाद हो गया सूडान?

सूडान आखिर बर्बर और रक्तरंजित इस्लामिक शासन में फंसा ही क्यों था और इसके दुष्परिणामों से सूडान की आबादी कितनी बर्बर, हिंसक और अमानवीय कीमत चुकायी है? सूडान का दुर्भाग्य आज से तीस साल पूर्व शुरू हुआ था। 1989 में सूडान में तख्तापलट हुआ था और उमर अल बशीर ने सूडान की सत्ता पर कब्जा कर लिया था। वह घोर इस्लामिक मानसिकता का परिचायक था और इस्लामिक जिहादी से प्रेरित था। उसने सत्ता पर कब्जा करने के साथ ही साथ उदार कानूनों को समाप्त कर दिया और सूडान को एक घोर बर्बर, लोमहर्षक और अमानवीय कानूनों से लाद दिया। उसने सूडान पर इस्लामिक शासन लाद दिया। उसके इस्लामिक राज में बलपूर्वक मुस्लिम बनाने का काम शुरू हुआ था। कई हजार ईसाइयों को बलपूर्वक मुस्लिम बनाया गया। जिन ईसाइयों ने बलपूर्वक मुस्लिम बनाने का विरोध किया था उनकी हत्याएं कर दी गयी। यही कारण है कि सूडान के अंदर आज मात्र तीन प्रतिशत ही गैर मुस्लिम बचे हैं।

इस बात को कोई नहीं नकार सकता कि नरमपंथी हो, सूफी हो शिया सुन्नी या कट्टरपंथी सभी विचारधाराओं का एक ही सहज लक्ष्य है कि मुसलमान शरियत हकुमत के अधीन ही जीवन व्यतीत करें। लेकिन आज दुनिया के बदलते दौर में एक परिवर्तन देखा जा रहा है कि भारत के बाहर देशों में मुस्लिमों का एक वर्ग इस्लामिक कानूनों को नकारने के लिए कमर कस चूका है। हाल ही में लम्बे संघर्ष और बलिदान आन्दोलनों के बाद अब सूडान के लोगों को इनसे मुक्ति मिलती दिख रही है क्योंकि वहां लोकतंत्र स्थापित हो रहा है। क्योंकि सूडान की सरकार ने शासन से मजहब को अलग करने का फैसला किया है, इसे लेकर सुडान के प्रधानमंत्री अबदुल्ला हमदोक और सूडान पीपुल्स लिबरेशन मूवमेंट-नॉर्थ विद्रोही समूह के नेता अब्दुल-अजीज अल हिलू के बीच इथियोपिया की राजधानी अदीस अबाबा में एक समझौते पर हस्ताक्षर भी किए गए हैं। अब यहां लोगों को आत्मनिर्णय का अधिकार होगा कि वो किस धर्म मत का चुनाव करते है। लेकिन इसमें खास बात ये है कि जिस देश की 99 प्रतिशत जनता शरियत हकुमत के खिलाफ हो, इस्लामी शासन के खिलाफ बगावत कर रही हो उस देश के कितने लोग अब इस्लाम में रहना चाहेंगे आप खुद अनुमान लगा सकते है?

यानि एक रक्तरंजित अवधारणा के विध्वंस होने की खुशी मनाया जाना चाहिए, जिहादी हिंसा पर मानवाधिकार और लोकतंत्र की जीत के तौर पर देखा जाना चाहिए। दुनिया को यह एक ऐसा रास्ता हाथ लगा है जिस पर चलकर दुनिया मुस्लिम हिंसा, मुस्लिम आतंकवाद, इस्लाम एकमेव सिद्धांत के बर्बर और अमानवीय करतूतों पर रक्तहीन विजय हासिल कर सकती है। यह सही है कि इस्लाम में लोकतंत्र या फिर गैर मुस्लिम मानवाधिकार की अवधारणा है ही नहीं। अभी तक दुनिया को मुस्लिम-जिहादी हिंसा, आतंकवाद और इस्लाम की एकमेव करतूतों पर विजय प्राप्त करने का रास्ता नहीं मिल पाया है। अब तक जो रास्ते खोजे गये उस पर चलकर ऐसे तत्वों और रक्तरंजित अवधारणों को समाप्त करना मुश्किल काम ही साबित हुआ हैं।

अमेरिका के नेतृत्व में नाटो देशों ने इराक, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, सीरिया सूडान और अन्य देशों में सैनिक क्षमता के प्रदर्शन कर अलकायदा, आई.एस.आई.एस. और बोकोहरम, तालिबान जैसे मुस्लिम आतंकवादी संगठनों पर लगाम तो लगायी पर इनकी मानसिकताओं को पूरी तरह से जमींदोज नहीं किया जा सका हैं। जहां पर सत्ता ही पूरी तरह से इस्लामिक रंग में रंगी होती है वहां पर बल प्रयोग करने या फिर हिंसा के खिलाफ प्रतिहिंसा से भी से भी ऐसी रक्तरंजित अवधारणाएं नहीं दबती है। इसलिए जरूरी यह है कि देश की सत्ता लोकतांत्रिक हो और धर्मनिरपेक्ष भी होनी चाहिए। लोकतांत्रिक और धर्मनिरपेक्ष सत्ता में ही मुस्लिम-जिहादी हिंसा, आतंकवाद और इस्लाम को स्थापित कर अन्य धर्मो का रक्तरंजित विनाश करने की अवधारणा का समाप्त किया जा सकता है।

यह संदेश उस छोटे से देश से निकला है जो वर्षों से इस्लामिक हिंसा से त्रस्त था, गृहयुद्ध झेल रहा था और जहां पर हजारों-हजार बच्चियां हर साल खतना की बुराई के कारण दम तोड़ दिया करती थी। जहां पर रक्तरंजित इस्लाम के कारण हिंसा, आतंकवाद और अमानवीय बर्बरता जारी हैं। लेकिन अब समझौते का आधार इस्लामिक शासन व्यवस्था की समाप्ति और एक लोकतंत्र का उदय होगा, यह लोकतंत्र कोई इस्लामिक राज व्यवस्था पर कायम नहीं होगा? जैसा लोकतंत्र ईरान में है, जैसा लोकतंत्र पाकिस्तान में है, जैसा लोकतंत्र तुर्की में है वैसा लोकतंत्र नहीं होगा। सूडान का लोकतंत्र भारत की तरह होगा, सूडान का लोकतंत्र ब्रिटेन की तरह होगा, सूडान का लोकतंत्र गृहयुद्धों में फंसे अन्य अफ्रीकी मुस्लिम देशो के बीच एक आईकॉन की तरह होगा? हमें यह भी सोचना चाहिए कि क्या ऐसे लोकतंत्र की सफलता अन्य मुस्लिम देशों में प्रारंभ होगी? सूडान आखिर बर्बर और रक्तरंजित इस्लामिक शासन में फंसा ही क्यों था और इसके दुष्परिणामों से सूडान की आबादी कितनी बर्बर, हिंसक और अमानवीय कीमत चुकायी है? सूडान का दुर्भाग्य आज से तीस साल पूर्व शुरू हुआ था। 1989 में सूडान में तख्तापलट हुआ था और उमर अल बशीर ने सूडान की सत्ता पर कब्जा कर लिया था। वह घोर इस्लामिक मानसिकता का परिचायक था और इस्लामिक जिहादी से प्रेरित था। उसने सत्ता पर कब्जा करने के साथ ही साथ उदार कानूनों को समाप्त कर दिया और सूडान को एक घोर बर्बर, लोमहर्षक और अमानवीय कानूनों से लाद दिया। उसने सूडान पर इस्लामिक शासन लाद दिया। उसके इस्लामिक राज में बलपूर्वक मुस्लिम बनाने का काम शुरू हुआ था। कई हजार ईसाइयों को बलपूर्वक मुस्लिम बनाया गया। जिन ईसाइयों ने बलपूर्वक मुस्लिम बनाने का विरोध किया था उनकी हत्याएं कर दी गयी। यही कारण है कि सूडान के अंदर आज मात्र तीन प्रतिशत ही गैर मुस्लिम बचे हैं।

उमर अल बशीर ने यह भी कानून बना दिया था कि जो एक बार भी मुसलमान बन गया वह फिर धर्म नहीं बदल सकता है, अगर वह धर्म बदलता है तो फिर उसकी सजा मौत होगी। इस बर्बर और अमानवीय कानून का प्रयोग भी खूब हुआ। मुसलमान छोडने वालों को सरेआम मौत की सजा दी गयी। ऐसी एक सजा दुनिया भर में चर्चित हुई थी। मरियम यहया इब्राहिम इशाग नाम की एक गर्भवती महिला को मौत की सजा इसलिए सुनायी गयी थी कि उसने इस्लाम छोडकर ईसाई पुरुष से शादी कर ली थी। नये लोकतंत्र में कोई भी मुस्लिम अपना मजहब छोडकर कोई अन्य धर्म स्वीकार करने के लिए स्वतंत्र होगा। इस्लामिक शासन व्यवस्था की सबसे बडी कीमत अबोध बच्चियों ने चुकायी है। इस्लामिक शासन में बच्चियों के लिए खतना अनिवार्य कर दिया गया था। खतना नहीं कराने पर बच्चियों के माता-पिता को जेल होती थी। बच्चियों का खतना इस्लामिक शासन का एक ऐसा हथियार है जिससे वह अपना खौफ भी कायम करता है और महिला अधिकार को भी गुलाम बनाकर रखता है, महिलाएं सिर्फ भोग की वस्तु है, इस इस्लामिक मान्यताओं को भी संरक्षित करता है। बच्चियों का खतना एक ऐसा भयावह पीड़ा है जिससे बच्चियां जीवन भर नहीं भूल पाती हैं। सूडान में इस बर्बर करतूत से हजारों अबोध बच्चियों की मौत होती थी। अब नये लोकतांत्रिक शासन में बच्चियों के खतना पर प्रतिबंध लगा दिया जायेगा।

इसके अलावा महिलाएं अब घर के पुरुषों के बिना भी सामूहिक स्थलों पर जाने के लिए स्वतंत्र होगी। सूडान ही क्यों बल्कि अरब और अफ्रीका महाद्वीप दर्जनों देश इस्लामिक शासन व्यवस्था के दंश

- शेष पृष्ठ 6 पर

बाल बोध

सफलता की राहें

मानव जीवन दो पक्षों में विभाजित है। जैसे एक है शुक्लपक्ष और दूसरा कृष्णपक्ष। मतलब यहां दिन भी होता है और रात भी होती है। वैसे ही जीवन में जीत भी होती है तो कभी हार भी होती है। सफलता प्राप्त कर अति हर्षित न हों और असफलता से कभी विचलित न हों। असफलता का सामना करने पर ही सफलता का महत्त्व समझ आता है। प्रस्तुत आलेख में प्रस्तुत है- सफलता तथा असफलता का सही संदेश....

मानव जीवन में हार और जीत ही जीवन की असफलता और सफलता है। जो लोग हार जाते हैं, उनकी सर्वत्र अवहेलना होती है। पग-पग पर उन्हें तिरस्कार के कडुवे घूंट पीने पड़ते हैं। असफल व्यक्ति सबसे पहले अपने ही बन्धुओं में लघुता को प्राप्त होता है। विजेता लोग तो पराजित का मनचाहा शोषण करते हैं। व्यष्टि और समष्टि दोनों क्षेत्र जय एवं पराजय के विशाल युद्धस्थल हैं। जो कहीं भी हारा, बस वह दु:ख सागर में डूबा, इसीलिए सब लोग विजय के लिए लालायित हैं, प्रयत्नशील हैं।

घर में, गांव में, प्रान्त में, राष्ट्र में ही नहीं जब तक सारे विश्व में भद्रपुरुष विजयी नहीं होते; तब तक क्या हम शान्ति पा सकते हैं? जब तक चारों तरफ दुष्टता का, धूर्तता का साम्राज्य है; तब तक अकेला भला आदमी क्या सुख शान्ति पाएगा? जब तक चारों तरफ दुर्गन्ध है, तो एक जगह ही सुगन्ध क्या फल दे सकेगी। जब हमारे आस-पास परमाणु बम फटेंगे, तो हम कैसे समाधि में बैठ सकेंगे। इसलिए आवश्यकता है संसार में श्रेष्ठ पुरुषों की जीत की। जब देवों का, परहित में आनन्द लेने वालों का साम्राज्य इस धरती पर होगा, तब ही सुख शान्ति के बादल मानव मात्र की अन्तरात्मा की पिपासा को शान्त करेंगे।

बाहरी दुनिया के समान हमारी अपनी अन्दर की दुनिया में भी घोर लड़ाइयां हो रही हैं। आप कहेंगे, यह युद्ध किन-किन का चल रहा है, तो सुनिए आसुरी एवं दैवी भावनाओं की लड़ाई हमारे मानस क्षेत्र में चल रही है, इस लड़ाई में यदि आसुरी सेना जीत गई, तो यह हार बाहरी हार से भी अधिक दु:खदाई है। इस युद्ध का एक दृश्य देखिए सोते समय दैवी भावना संकल्प करती है प्रात:काल शीघ्र उठना है, प्रभु का भजन करना है; परन्तु आसुरी सेना ठीक मौके पर आक्रमण कर देती है और दैवी सेना को दबोच लेती है। बार-बार संकल्प करते हैं; पर पूरा नहीं कर पाते, हार जाते हैं। वर्षो बीत गए, पर सफलता नहीं मिलती।

हार का कारण समझ में नहीं आता। ऐसे समय में लोगों के मुंह से सुनते हैं-मैं क्या करूं, मेरे वश की बात नहीं। तब हमें ऋषियों की चरण-शरण में पहुंचना चाहिए। हमें उनसे विनीत भाव से पूछना चाहिए कि हे महर्षे! सर्वविध विजय लाभ का रहस्य हमें बताइए। बाहरी एवं आन्तरिक असुरों को हराने का सूत्र हमें बताओ। तब ऋषि बोलेंगे अवश्य! उसे सुनो, शतपथ ब्राह्मण में महर्षि याज्ञवल्क्य ने विजय सूत्रों का उपदेश दिया है, जिसका प्रथम सूत्र यह है-

"या वै प्रजा यज्ञेऽनवभक्ता: परा भूता वै ता या इमा:। प्रजा अपराभूत ता यज्ञे आभजाति।।"

जो प्रजा यज्ञ की भक्त नहीं है, श्रद्धा से जो लोग यज्ञ का अनुष्ठान नहीं करते हैं। वे लोग इस संसार में सदैव पराभव के मुख को देखते हैं और जो लोग यज्ञ का अनुष्ठान नहीं करते हैं। वे लोग इस संसार में सदैव पराभव के मुख को देखते हैं, और जो लोग तुम्हें अपराजित दीखते हैं, समझो, वे यज्ञ का सेवन करते हैं, यह अवश्य विचारना जो दोनों समय प्रात: सायं याज्ञिक कर्म करते हैं; फिर भी हार रहे हैं, तो वस्तुत: वे यज्ञ नहीं करते, वे

- शेष पृष्ठ 7 पर

अनावश्यक विचारों को कैसे नियन्त्रित करें?

....शुभ विचारों को स्थान दें - अश्लील विचार आयें तो उसके अन्तिम परिणाम का भी विचार करें। क्योंकि व्यक्ति जैसा विचार करता है वे देर-सवेर क्रिया में बदल जाते हैं। जिसका परिणाम समाज में अपयश, शासन की दण्ड व्यवस्था के साथ कलंक का टीका भी लग जाता है। जिस शरीर पर आसक्त हो रहे हैं उसका छेदन करें तो रुधिर, हाड़, मास, मल-मूत्र के अतिरिक्त कुछ भी ऐसा नहीं है जिस पर आसक्त हुआ जाये।....

- डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती

गतांक से आगे -

अत्यधिक सोचते रहने से हानियाँ-

1. धृति शक्ति दुर्बल हो जाती है। धृति का अभिप्राय धैर्य धारण करना है। इसके कम होने से व्यक्ति विपत्ति में सन्तुलित नहीं रह पाता और अनैतिक कार्यों की ओर प्रवृत्त हो सकता है।

2. व्यक्ति के मस्तिष्क के ज्ञान तन्तु सिकुड़ जाते हैं।

3. व्यक्ति की निर्णय लेने की क्षमता न्यून हो जाती है।

4. उसकी निद्रा बाधित होती है और स्वप्न अधिक आते हैं।

5. वह किसी भी कार्य को भली भाँति नहीं कर पाता।

6. व्यक्ति मानसिक दबाव एवं तनाव ग्रस्त हो जाता है।

समाधान

जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि अधिक सोचना एक आदत बन जाती है जिसे निम्न उपायों से बदलना चाहिये।

1. अतृप्त इच्छाएं - अतृप्त इच्छाओं की पूर्ण रूप से पूर्ति सम्भव नहीं है। जैसे किसी नदी की धारा को दूसरी दिशा में ले जाना है तो पहले उसके स्रोत पर बांध लगाकर दूसरी ओर पानी प्रवाहित होने का मार्ग बनाना होता है। इसी भाँति इच्छाओं का उदात्तीकरण कर देने से उनकी दिशा बदल जाती है और वे परेशान भी नहीं करती। अथवा विवेक ज्ञान से उन्हें दग्ध बीज कर दें।

2. योग अभ्यास करें - मन की वृत्तियों का निरोध करने के लिये सर्वोत्तम उपाय योग है। आसनों से नाड़ी मण्डल पर शान्त प्रभाव पड़ता है। प्राणायाम से मन की पाप वृत्तियाँ दब जाती हैं। मन के विकार प्रत्याहार से शान्त होते हैं। धारणा से पाप की वासना दूर होती है और ध्यान समाधि से आत्मा- परमात्मा का साक्षात्कार होता है।

3. अकेले न रहें - अन्तर्मुख या भावुक व्यक्ति अकेला ही रहना पसन्द करता है। ऐसा व्यक्ति सामान्य घटना पर ही बहुत संवेदनशील हो जाता है। संवदेना प्रकट करना बुरा नहीं है परन्तु जब उसका वेग बढ़ जाये तो व्यक्ति की दिशा परिवर्तित हो जाती है। इसको कम करने के लिये परिवार और मित्रों के साथ कुछ समय बातचीत, गप-शप और मनोरंजन में लगायें।

4. उतावला सो बावला - एक ही काम के पीछे पड़ जाना बुद्धिमत्ता नहीं है। किसी भी कार्य में समय तो लगता ही है। समय पर ऋतुओं का आगमन होता है। समय पर वृक्षों पर फल लगते हैं। लोक में कहावत है-गीदड़ के जल्दी करने से बेर पक नहीं जाते। उनको पकने के लिये अपेक्षित समय चाहिये ही।

5. अप्रमादात् भयं रक्षेत् - प्रमाद को छोड़ भय से सुरक्षा करें। सावधानी हटी और दुर्घटना घटी। अधिकांश भय काल्पनिक होते हैं।

6. अपनी आदतों को सुधारें - हम जो भी कार्य करते हैं उसके संस्कार हमारे चित्त पर पड़ते रहते हैं। ये संस्कार ही सुदृढ़ होकर आदत में बदल जाते हैं। गलत आदतों को छोड़ने के लिये अच्छी आदतों का प्रारम्भ करें। मन में यह सदा स्मरण रखें कि मुझे अमुक आदत छोड़नी ही है। गलत आदतों के प्रति सावधान रहें।

7. शुभ विचारों को स्थान दें - अश्लील विचार आयें तो उसके अन्तिम परिणाम का भी विचार करें। क्योंकि व्यक्ति जैसा विचार करता है वे देर-सवेर क्रिया में बदल जाते हैं। जिसका परिणाम समाज में अपयश, शासन की दण्ड व्यवस्था के साथ कलंक का टीका भी लग जाता है। जिस शरीर पर आसक्त हो रहे हैं उसका छेदन करें तो रुधिर, हाड़, मास, मल-मूत्र के अतिरिक्त कुछ भी ऐसा नहीं है जिस पर आसक्त हुआ जाये। - ***शेष अगले अंक में***

Makers of the Arya Samaj : Mahatma Hansraj

Continue From Last issue

A student of science, he was also familiar with literature. His memory was wonderful and his intellect very keen. He could write English very well. L. Lajpat Rai was a young man of great energy. He could speak in a way which moved people. He was a great orator. Hans Raj was known for his common-sense, wisdom and foresight. He thought things out calmly and did his work patiently and steadily. These three were the pride oftheArya Samaj. Though they differed from one another, they had one thing in common. They were very much devoted to the Arya Samaj.

L. Sain Das knew how useful these young men could be to the Arya Samaj. So he took exceptional interest in them. Even though they were young, he entrusted them with responsible work. At that time the Arya Samaj was in its infancy. It needed an organ for making its ideals known to the people. L. Sain Das, therefore, started *The Regenerator of the Arya Varta,* an English weekly. He asked Pt. Guru Dutt and L. Hans Raj to edit it. Other Arya Samajists were surprised at this. But L. Sain Das knew better. He knew that the young men would make a success oftheir job. And so they did.

The Headmaster asked him where he had learned these things. Hans Raj referred to a book named Qasas-i-Hind (the Story of India) which was written in Urdu. In it were written the foHowing words, "The Ancient Aryans were a wise, intelligent and good people. They were highly civilized and were always guided by noble principles. They worshipped only one God, who pervades the whole world. They did not worship anything else but Him. Their religion was based on very lofty principles. They believed that action, worship and knowledge are the three chief parts of religion." But this did not convince the Headmaster. He still kept to his own point of view. To prove it he referred to a book which was used in the school. It said that the ancient Aryans were barbarians.

But it meant hard work for them. Hans Raj, especially, did not spare himself. Every day he would come back from the college at eleven o'clock. Then he would go straight to the press. There he would correct the proofs as well as revise the articles sent by others. He would also write something of his own. At two 0' clock he was free. Then he would go home and take his meal.

That he wrote quite well for his age none can deny. His first article was shown to a Bengalee gentleman, who liked it. But Hans Raj wanted to get a certain other gentleman's opinion on it. He therefore took it to him. After going through it the gentleman made only one change. He changed the word "slumber" into "deep sleep." This shows that even though an undergraduate Hans Raj could express himself with ease.

This journal served many useful purposes. In the first place, it helped to popularize modern science. This was done to remove the superstitions then current amongst the people. It also spread the message ofthe Vedas. This it did by interpreting every event in the light of these sacred books. But above all, it spoke for the Arya Samaj.It defended it against the attacks of others.

Though Hans Raj gave much time to this work, yet he did not neglect his studies. He took his Degree in 1885, and came second amongst the successful candidates. The first

place was occupied by his friend, Pt. Guru Dutt.

Hans Raj now stood at the parting ofthe ways. At that time it meant a great deal to be a graduate. For a young man like him, many careers were open. He could have become a lawyer and grown rich. He could have joined one of the Government services and done well. He could also have sat for an examination and qualified himself as a Munsiff or an Extra Assistant Commissioner.

To be continued.....

With thanks By:
"Makers of Arya Samaj"

पृष्ठ 5 का शेष

इस्लामिक कानूनों से आजाद हो .....

को झेलने के लिए विवश हैं, अधिकतर देशों में गृहयुद्ध की स्थिति है। एक मुस्लिम आतंकवादी संगठन अपने इस्लाम की मान्यताओं को स्थापित कराने के लिए दूसरे मुस्लिम आतंकवादी संगठनों के समर्थकों को गाजर-मूली की तरह काटता है। ऐसी स्थिति सूडान के साथ ही साथ नाइजीरिया, इथोपिया, इराक, सीरिया आदि देशों में आसानी से देखा जा सकता है। इसके अलावा अरब के कुछ देशों जैसे मिश्र, लेबनान, अफ्रीका महाद्वीप के दर्जनों देशों में मुसलमानों और ईसाइयों के बीच गृहयुद्ध जारी है। इसमें ईसाई भी पीडित हैं। लाखों इसाइयों को मुस्लिम बनने के लिए बाध्य होना पडा था। इसी पर आधारित एक फिल्म यूनोसेंट आफ मुस्लिम्स ने दुनिया भर में तहलका मचाया था। इस फिल्म के खिलाफ अरब और अफ्रीका में मुस्लिम आतंकवादी संगठनों ने बहुत बडी और रक्तरंजित प्रतिक्रिया दी थी। अब दुनिया को सूडान के प्रस्तावित लोकतंत्र को मुस्लिम देशों के लिए एक आईकॉन शासन प्रणाली के तौर पर प्रस्तुत करना चाहिए, प्रोत्साहित करना चाहिए। इस्लामिक शासन व्यवस्था पर लोकतंत्र की स्थापना से ही मुस्लिम आतंकवाद और घृणा पर विजयी हासिल हो सकती है। हमें इस बर्बर, लोमहर्षक, अमानवीय इस्लामिक शासन के पतन और नये लोकतंत्र की स्थापना पर खुशी मनाना ही चाहिए। उम्मीद भी यही है कि अन्य अफ्रीकी और अरब के देश भी सूडान के प्रस्तावित लोकतंत्र का स्वागत करें। लोकतान्त्रिककरण पर ही अरब और अफ्रीकी देशों की समृद्धि संभव होगी।

- राजीव चौधरी

ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना मन्त्रों की प्रतियोगिता

आर्य समाज शक्ति नगर अमृतसर के तत्वावधान में 13/9/2020 को ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना मन्त्रों की प्रतियोगिता करवाई गई, जिसमें अलग अलग जगह से अलग-अलग समाजों से 21 प्रतियोगियों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता का मुख्य लक्ष्य था, मन्त्रों का शुद्ध उच्चारण। सभी प्रतियोगियों का उच्चारण सराहनीय था। प्रतियोगिता का निर्णय देने के लिए निर्णायक आचार्य दयानन्द शास्त्री जी, श्रीमती गौमती जी, एवं श्रीमती नीरू मल्होत्रा ने बहुत बढ़िया काम किया, बाद में सभी जजों ने कहाँ-कहाँ शुद्धि होनी चाहिये वो बताया। प्रतियोगिता में प्रथम - रेणु घई जी, सुनीता अरोड़ा जी, द्वितीय स्थान - इन्दिरा अरोड़ा जी, विजय अरोड़ा जी, डा. ऋचा सचदेवा जी तथा तृतीय स्थान - सुरति अरोड़ा ने प्राप्त किया।

- मुकेश आनन्द, उप मन्त्री

आर्य धर्मार्थ होम्योपैथिक औषधालय का उद्घाटन

आर्यसमाज बिरला लाइन्स, कमला नगर में दिनांक 11 सितम्बर, 2020 को प्रात: 10 बजे आर्य धर्मार्थ होम्योपैथिक औषधालय का उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर आर्यसमाज के संरक्षक श्री अनिल गोयल, प्रधान श्री संजीव बजाज, मंत्री श्री अजय अग्रवाल जी, कोषाध्यक्ष श्री विश्वनाथ बंका जी जी उपस्थित थे। मंत्रपाठ आचार्य कुंवरपाल शास्त्री ने किया। औषधालय प्रतिदिन 10:00 से 12:00 तक खुलेगा डॉक्टर रेवती रमण कपूर जी हैं। सभी से निवेदन है की औषधालय का लाभ उठाएं। - ***प्रधान***

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा/ आर्यसमाज दिल्ली से सम्बन्धित नवीनतम सूचनाओं व जानकारियों हेतु जुड़ें व्हाट्सएप्प पर और साझा करें विचार

उपनिषद् अध्ययन एवं आर्यवीर प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

पूज्य स्वामी देवव्रत सरस्वती जी के मार्गदर्शन में गुरुकुल पौंधा देहरादून में 14 दिवसीय उपनिषद् अध्ययन और आर्यवीर दल का शाखानायक व उप व्यायाम शिक्षक श्रेणी का प्रशिक्षण का समापन 21 अगस्त को हुआ। शिविर में प्रतिदिन प्रात: ध्यान की कक्षाओं का संचालन किया गया, जिसमें ब्रह्मचारियों को पंचकोष एवं प्रत्याहार साधना का अभ्यास कराया गया। बृहदारण्यक एवं श्वेताश्वेतर उपनिषद् का अध्ययन कराया तथा सांयकालीन सत्र में उपव्यायाम शिक्षक तथा 20 छात्रों को शाखानायक श्रेणी का प्रशिक्षण प्रदान किया। प्रतिदिन 'व्यक्तित्व विकास' पर चर्चा की। समापन के अवसर पर स्वामी देवव्रत जी की पुस्तक 'प्रेरणा'- युवाओं की समस्या एवं समाधान का विमोचन किया गया, जिसका प्रकाशन माटा परिवार के सौजन्य से गुरुकुल पौन्धा देहरादून द्वारा हुआ। पुस्तिका में सदा उत्साहित रहने के उपाय, जीवन में सफलता कैसे प्राप्त करें? सही निर्णय कैसे लें? आदि 25 विषयों पर मार्गदर्शन किया गया है।

- गुरुकुल आचार्य

सुख समृद्धि हेतु यज्ञ कराएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजना 'घर-घर-यज्ञ, हर-घर-यज्ञ' राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में उत्साह पूर्वक नित्य निरंतर प्रगति की ओर है। वैदिक वाङ्मय में यज्ञ की विशेष महत्ता का वर्णन मिलता है। यज्ञ के द्वारा संसार के सभी ऐश्वर्य मानव को प्राप्त होते हैं। यजुर्वेद में कहा गया है कि 'अयं यज्ञो भुवनस्य नाभि:' अर्थात् यज्ञ संसार का केन्द्र बिन्दु है, अर्थात् विश्व का आधार है। शतपथ ब्राह्मण में कथन है कि 'स्वर्ग कामो यजेत्' अर्थात् हे मनुष्य यदि तू संसार के सुख प्राप्त करना चाहता है तो यज्ञ कर। आप भी अपने घर-परिवार में यज्ञ कराने के लिए ***मो.नं. 9650183335 पर*** सम्पर्क करें। यदि परमात्मा की व्यवस्थानुसार आपका परिजन/परिचित मृत्यु को प्राप्त होता है, उसके अन्तिम संस्कार की व्यवस्था हेतु भी आप सम्पर्क कर सकते हैं। *- संयोजक*

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा
के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्यूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

पृष्ठ 5 का शेष

यज्ञ को समझते भी नहीं है। जो यज्ञ वे करते हैं, वह यज्ञ नहीं; अपितु यज्ञ का अभ्यास है। उस अभ्यास को भी वे ठीक तरह से नहीं करते, न तो मन्त्रों के अर्थों को समझते हैं, और न उन पर मनन करते हैं। इसलिए उनका यज्ञ से कभी विजय लाभ नहीं होता। वस्तुत: असली यज्ञ यह है-

'सामुदायिकं योगक्षेममुद्दिश्य समुदायांगतया क्रियमाणं कर्म यज्ञ:।'

किसी परोपकारी संगठन का सदस्य बनकर उस संगठन के लिए अपने आपको समर्पित करके जो कर्म किए जाते हैं; उन कर्मों के करने का नाम यज्ञ है। वे कर्म किस तरह किए जाते हैं, उनकी शिक्षा-यज्ञ से दी जाती हैं। जो शिक्षा लेता रहे और कर्म करे नहीं, अथवा शिक्षा को भी न समझे, क्या उसकी जीत होगी? कदापि नहीं। इसलिए विजय हेतु संगठन के प्रति समर्पित होना पड़ेगा। यदि संगठन है, तो उसमें सबसे पहले अपनी आत्मा की आहुति दो, फिर देखोगे कि विजयश्री सुख समृद्धि सहित तुम्हारे पास आ रही है, और चारों तरफ विजय ध्वनि की गूंज सुनाई दे रही है। तब तुम्हारा घर घर नहीं, स्वर्ग है, तुम्हारा नगर या गांव स्वर्ग की नगरी है, तब अन्य देशवासी भी कह उठेंगे कि इनका देश तो साक्षात् स्वर्ग बन गया है, कोई चोर नहीं, डाकू नहीं, सब ओर भद्रता, सृजनता शालीनता का ही साम्राज्य है; क्योंकि इस देश के वासी यज्ञपरायण हैं।

जो अपने संकल्प पर खड़ा है, अविचल है, वह आगे बढ़ जाता है। बड़े-बड़े बुद्धिमान किं व बलवान शक्तिशाली उसे देखते ही रह जाते हैं। और जिसमें धैर्य नहीं, अविचलता नहीं, थोड़ा सा कष्ट आया और रास्ता बदल दिया, वे बुद्धिमान होते हुए, साधनायुक्त होते हुए भी पीछे रह जाते हैं। ऐसे लोगों के दर्शन प्राय: प्रतिदिन होते हैं। लेकिन दुनिया में सफल होना हो, अग्रगण्य बनना हो, सफलता देवी का साक्षात्कार करना हो तो अपने लक्ष्य की परिपूर्ति में लगे रहना चाहिए। असफलता के कितने भी प्रहार हों फिर भी हमें घबराना नहीं चाहिए। तभी हम सही अर्थों में सफलता के सोपान को प्राप्त करते हैं।

वस्तुत: विजय और पराजय के मूल में नम्रता, दयालुता और अहंकार ही हैं। तनिक सी सफलता और ऐश्वर्य को पाकर जो अहंकार से ग्रस्त हो जाता है, वह रावण की गति को प्राप्त होता है, किन्तु जो सफलता प्राप्त करने पर भी विनम्र और दयालु होता है, उसकी विजयश्री निश्चित है। विनम्रता को धारण करने वाले देव हुआ करते हैं। वे देव नमनीय हैं, वन्दनीय हैं।

अहंकार या घमण्ड से ग्रस्त असुर होते हैं। असुरों का ऐश्वर्य तथा सफलता चिरस्थाई नहीं होती है। उन्हें तो किसी न किसी दिन धूल चाटनी ही पड़ती है। राम देवों के प्रतिनिधि हैं और रावण असुरों के। श्रीराम लंका जीतते हैं; किन्तु घमण्ड नहीं करते हैं उस जीते हुए राज्य को वे रावण के भाई विभीषण को सौंप देते हैं किन्तु असुर प्राप्त किए हुए ऐश्वर्य को अपने भाई को भी नहीं देना चाहते है। इसलिए कहा जाता है अधिक घमण्ड करना ही पराजय का मुख है।

पराभवस्य हैतन्मुखं यदातिमान:।

अर्थात् अभिमानी व्यक्ति पराजय का मुख अवश्य देखते हैं। अत: विजय का रहस्य है पूर्णत: विनम्र एवं दयालु होना।

-आचार्य अनिल शास्त्री

शोक समाचार

श्री क्रान्ति तनेजा जी को मातृशोक

आर्यसमाज पंजाबी बाग से जुड़े श्री क्रान्ति तनेजा जी एवं श्री अखिल तनेजा जी की पूज्य माताजी एवं श्री आर. पी. तनेजा जी की धर्मपत्नी श्रीमती सन्तोष तनेजा जी का दिनांक 12 सितम्बर, 2020 को अकस्मात निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 15 सितम्बर, 2020 को आर्यसमाज पूर्वी पंजाबी बाग में सम्पन्न हुई।

श्री गुरुदीन प्रसाद रुस्तगी जी का निधन

आर्यसमाज कृष्ण नगर दिल्ली के पूर्व मन्त्री एवं विश्व हिन्दू परिषद् के प्रान्त संरक्षक श्री गुरुदीन प्रसाद रुस्तगी जी का 13 सितम्बर को निधन हो गया। अन्तिम संस्कार 14 सितम्बर को निगम बोध घाट पर पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

श्री चन्द्र प्रकाश गुप्ता जी को भातृशोक

आर्य केन्द्रीय सभा गुरुग्राम के उप प्रधान श्री चन्द्र प्रकाश गुप्ता जी के ज्येष्ठ भ्राता एवं आर्यसमाज जैकबपुरा (गुरुग्राम) के वरिष्ठ सदस्य श्री राजकुमार गुप्ता जी जी का कोरोना संक्रमण से ग्रस्त होने के कारण 10 सितम्बर, 2020 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार मदनपुर शमशान घाट पर किया गया।

श्री गंगाराम कर्षण भवानी जी का निधन

गत 35 वर्षों से आर्यसमाज घाटकोपर (मुम्बई) से जुड़े श्री गंगाराम कर्षण भवानी (आर्य) जी का दिनांक 12 सितम्बर, 2020 को 84 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उन्होंने पनवेल में महर्षि दयानन्द चौक का निर्माण कराया था ।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 14 सितम्बर, 2020 से रविवार 20 सितम्बर, 2020

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 17-18 सितम्बर, 2020

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 16 सितम्बर, 2020

आर्य संदेश टीवी चैनल
www.AryaSandeshTV.com

1 से 30 सितम्बर तक प्रसारित होने वाले कार्यक्रम

प्रात: 5:00 जागरण मन्त्र
प्रात: 5:05 शरण प्रभु की आओ रे
प्रात: 6:00 क्रियात्मक ध्यान
प्रात: 6:30 संध्या
प्रात: 6:45 आओ ध्यान करें
प्रात: 7:00 दैनिक अग्निहोत्र
प्रात: 7:30 वैदिक विद्वानों के सान्निध्य में व्याख्यानमाला (लाइव)
प्रात: 8:30 भजन सरिता
प्रात: 9:00 न्यूज बुलेटिन - भजन उत्सव
प्रात: 10:00 प्रवचन संग्रह
प्रात: 10:30 नव तरंग
प्रात: 11:00 प्रवचन माला
प्रात: 11:30 क्रियात्मक ध्यान
अपरान्ह 12:00 श्री राम कथा
अपरान्ह 12:30 स्वामी देवव्रत प्रवचन
अपरान्ह 1:00 विशेष
अपरान्ह 2:00 आर्य मंच
अपरान्ह 2:30 भजन सरिता
अपरान्ह 3:00 प्रवचन माला
अपरान्ह 3:30 नव तरंग
सायं 4:00 न्यूज बुलेटिन-भजन उत्सव
सायं 5:00 क्रियात्मक ध्यान
सायं 5:30 शरण प्रभु की आओ रे
सायं 6:00 सायंकालीन अग्निहोत्र
सायं 6:30 संध्या
सायं 6:45 आओ ध्यान करें
सायं 7:00 वेदवाणी
सायं 7:30 श्री राम कथा
सायं 8:00 भजन सरिता
सायं 8:30 स्वामी देवव्रत प्रवचन
रात्रि 9:00 वैदिक विद्वानों के सान्निध्य में व्याख्यानमाला (पुन: प्रसारण)
रात्रि 10:00 शयन मन्त्र
रात्रि 10:05 न्यूज बुलेटिन - भजन उत्सव
रात्रि 11:00 नव तरंग
रात्रि 11:30 प्रवचन माला
रात्रि 12:00 स्वामी देवव्रत प्रवचन
रात्रि 12:30 शरण प्रभु की आओ रे
रात्रि 1:00 विशेष
रात्रि 2:00 वैदिक विद्वानों के सान्निध्य में व्याख्यानमाला (पुन: प्रसारण)
रात्रि 3:00 आर्य मंच
रात्रि 3:30 स्वामी देवव्रत प्रवचन
प्रात: 4:00 न्यूज बुलेटिन-भजन उत्सव

नोट : आपातकालीन स्थिति में उपरोक्त दैनिक कार्यक्रमों में परिवर्तन किए जा सकते हैं। - ***व्यवस्थापक***

आर्य सन्देश

क्या आप चाहते हैं कि-

आर्यसन्देश को प्रचारित प्रसारित किया जाए?

आपके चाहने वालों को भी प्राप्त हो?

आपके विदेश में रहने वाले दोस्तों को भी प्राप्त हो?

आपके मित्रों-रिश्तेदारों को भी प्राप्त हो जो इसे पढ़ने की रूचि रखते हों?

यदि हां! तो

जिन मित्रों को आर्यसन्देश पढ़ाना चाहते हैं उनकी ईमेल आई.डी. लिखकर हमें डाक से भेजें, ईमेल करें या 9540040322 पर एस.एम.एस. करें। उन्हें आर्यसन्देश प्रति सप्ताह इंटरनेट/टेलिग्राम द्वारा भेजा जाता रहेगा। - सम्पादक

प्रतिष्ठा में,

भारत के सांस्कृतिक सन्तुलन की रक्षा हम सब का दायित्व
इन पांच पुस्तकों को अवश्य पढ़ें

पुस्तकें
प्राप्ति हेतु सम्पर्क करें:
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड,
नई दिल्ली-110001
मो. 9540040339

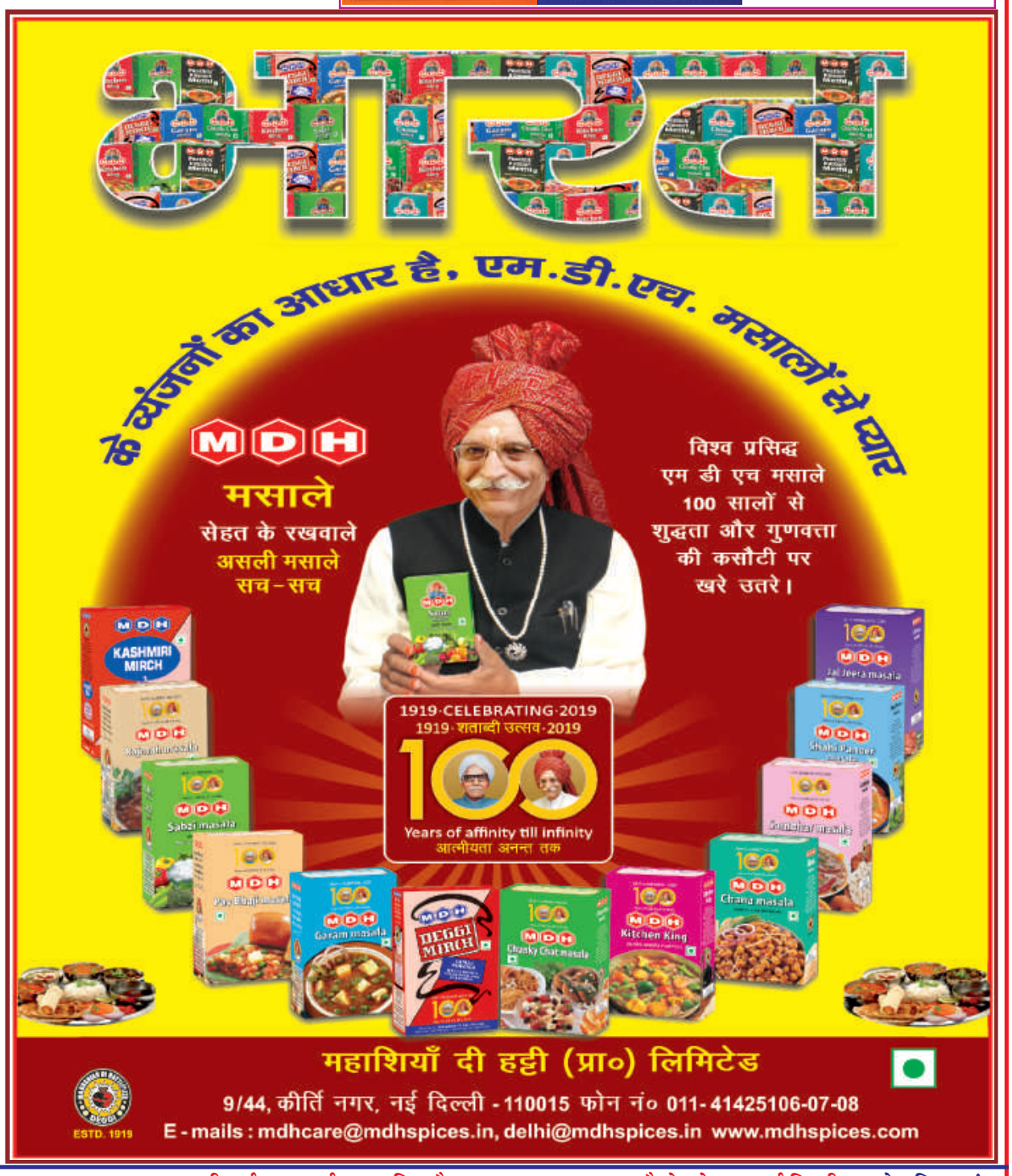

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह